DSSSB PRT, TGT & PGT

Part(A+B)

SCHOLAR BATCH

हिन्दी

प्रमुख कवि और उनकी पंक्तियाँ

Part -2

LIVE 25-07-2024 09:00 AM

सुन्दरदास

❖ संत सुन्दरदास शृंगार रस के कट्टर विरोधी थे। वे लिखते हैं-

(1) रसिक प्रिया रजमंजरी और सिंगारहि जानि।
चतुराई करि बहुत विधि विषै बनाई आनि ।।

❖ कुतुबन

रूकमिनि पुनि वैसहि मरि गई। कुलवंती सत सों सति भई ।।
बाहर वह भीतर वह होई। घर बाहर को रहै न जोई ।।
विधि कर चरित न जानै आनू। जो सिरजा सो जाहि नियानू ।।

मंझन

(1) देखत ही पहिचानेउ तोहीं। एही रूप जेहि छँदयों मोही ।।
एही रूप बुत अहै छपाना। एही रूप रब सृष्टि समाना ।।
एही रूप सकती और सीऊ। एही रूप त्रिभुवन कर जोऊ ।।
एही रूप प्रकटे बहु भेसा। सही रूप जग रंक नरेसा ।।

(2) बिरह अवधि अवगाह अपारा। कोटि माहिं एक परै त पारा।।
बिरह कि जगत अविरथा जाही। बिरह रूप सृष्टि सबाही ।।

❖ रामानन्द

(1) आरती कीजै हनुमान लला की दुष्टदलन रघुनाथ कला की।

(2) जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥

❖ अग्रदास

(1) कुण्डललित कपोल जुगल अस परम सुदेसा।

(2) मेचक कुटिल विसाल सरोरुह नैन सुहाये,
मुख पंकज के निकट मनौ अलि छौन छाये ॥

(3) पहरे राम तुम्हारे सोवत। मैं मतिमंद अंध नहिं जोवत ॥

केशवदास

(1) भाषा बोलि न जानहिं जिनके कुल के दास।
भाषा कवि भो मंदमति ते हि कुलकेसवदास ।।

श्रीभट्ट

(1) भीजंत कब देखौं इन नैना।
स्यामा जू की सुरंग चूनरी, मोहन की उपरैना ।।

(2) ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहनकुंज, मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी ।।

(3) बसौ मेरे नैननि में दोउ चंद
गोरे बदनि वृषभानु, नन्दिनी, स्याम बरन नंद नंद ॥

(4) रस की रेलि बेलि अति बाढ़ी।
दम्पति की हित बाबरि बिहरनि रहो सदा मेरे चित चाढ़ी ॥

(5) स्यामा स्याम कुंजतर ठाढ़े, जतन कियो कछु मैं ना।

(6) आनन्द कन्द श्रीनन्द सुवन, श्री वृषभानु सुता भजन ।

हितहरिवंश

(1) रहो कोउ काहू मनहिं दिए।

मेरे प्राननाथ श्री स्यामा सपथ करौ तिन छिए ।।

(2) ब्रज नवतरुनि कदंब मुकुटमनि स्यामा आजु बनी।

नख सिख लौ अंग अंग माधुरी मोहे श्याम धनी ॥

(3) विपिन घन कुंज रीति केलि भुज केलि रुचि ।

स्याम स्यामा मिले सरद की जामिनी ।।

(4) सबसों हित निष्काम मति वृन्दावन विश्राम ।

राधावल्लभ लाल कौ, हृदय ध्यान मुख नाम ।।

हरिराम व्यास

(1) यह जो एक मन बहुत ठौर करि कहि कौन सचु पायो ।
जहँ तहँ विपति जार जुवति ज्यों प्रकट पिंगला गायो ||

परमानन्ददास

(1) जब ते प्रीति श्याम ते कीनी ।
ता दिन ते मेरे इन नैननि नेंकह नींद न लीनी।।

(2) कहा करौ बैकुंठहि जाय।

जहँ नहिं नंद, जहा न जसोदा, नहिं जहँ गोपी ग्वाल न गाय ।।

(3) राधे जू हीरावाले टूटी।

उरज कमलदल माल मरगजी, बाम कपोल अलकलट् छूटी।।

कृष्णदास

(1) मो मन - मन गिरधर छवि पर अटक्यौ।

ललित त्रिभंगी, अंगन पर चलि, गयो तन्हाई टक्यौ।

(2) कंचन मनि मरकत रस ओपी।

नंद सुवन के संगम सुखकर अधिक विराजति गोपी।।

नन्ददास

(1) ताही छिन उडुराज उदित रस रास सहायक।
कुम्कुम-मंडित - बदन प्रिया जनु नागरि नायक ।।

(2) नव मर्कत मनि स्याम कनक मनिगम ब्रजबाला |
वृन्दावन को रीझि मनहुँ पहिराइ माला ।।

गौड़ीय सम्प्रदाय

गदाधर भट्ट

(1) सखी हौं स्याम रंग रंगी।

देखि बिकाय गई वह मूरति, सूरत माहिं पगी ।।

(2) झूलति नागरि नागर लाल

मंद मंद सब सखी झुलावति, गावति गीत रसाल ॥

(3) जयति श्री राधिके, सकल - सुख साधिके,

तरुन मनि नित्य नव तन किसोरी

रीतिकाल

रसखान

(1) मानुष हो तो वही रसखान बसौं सँग गोकुल गाँव के ग्वारन ।

(2) या लकुटी अरु कामरिया पर राज तिनू पुर को तजि डारौं ।

(3) ब्रह्म मैं ढूढ्यो पुरानन गानन, वेदरिया सुनी चौगुने चायन ।

(4) मोर पखा सिर ऊपर राखिहौ, गुंज की माल गले पहिरौंगी ।
ओढ़ि पिताम्बर लै लकुटी बन गोधन ग्वालन संग फिरौंगी ॥

(5) सेस महेस गनेस दिनेस सुरेसहु जाहिं निरंतर गावैं ।

चिन्तामणि

❖ (1) रीति सुभाषा कवित्त की बरनत बुध अनुसार ।

- (कविकुलकल्पतरु)

(2) येई उधारत हैं तिन्हें जे परे मोह महोदधि के जल फेरे ।

(3) इक आजु मैं कुंदन बेलि लखी, मनिमंदिर की रुचिवृन्द भरैं ।
अरविंद के पल्लव इन्दु, तहाँ, अरविन्दन ते मकरन्द झरैं ।।

(4) आँखिन मुंदिबे के मिस आनि, अचानक पीठि उरोज लगावै ।
कैहूँ कहूँ मुसकाय चितै, अगराय अनूपम अंग दिखावै।।

(5) अवलोकनि में पलकैं न लगें, पलकौं अवलोकि बिना ललकै।
पति के परिपूरन प्रेम पगी मन और सुभाव लगै न लकै।।
तिय की बिहं सौही विलोकनि में, 'मनि' आनन्द आँखिन यो झलकै।
रसवंत कवित्तन को रस ज्यों अखसन के ऊपर है छलकै।।

(6) सगुन अलंकारन साहित दोष रहित जो होई।
अर्थ शब्द ताको कवित्त कहत विवुध सब कोई ।।

मतिराम

- (1) नृपति नैन कमलनि वृथा, चितवत बासर जाहि।
  हृदय कमल में हरि लै, कमलमुखी कमलाहि ।। (सतसई)

(2) छोड़ि आपनो भौन तुम, भौन कौन के जात।

(3) ते धनि ले ब्रजराज लखें गृहकाज करें अरु लाज सम्भारें।

(4) कोऊ कितेक उपाय करो, कहूँ होत हैं आपुने पीव पराये।

(5) कुन्दन को रंग फीकौ लगै झलकै सब अंगन चारु गुराई।
आँखनि में अलसानि चितौनि में, मुंज बिलासन की सरसाई।।
को बिनु मोल बिकात नहीं मतिराम लहै मुसकानि मिठाई।
ज्यों ज्यों निहारिए नेरे है नैननि त्यों त्यों खरी निकरैं सी निकाई।।

(6) क्यों इन आंखिन सो निहसंक है मोहन को तन पानिप पीजै ?
नेकु निहारे कलंक लगै यहि गाँव बसे कहु कैसे के जीजै।।

(7) केलि कै राति अघाने नहीं दिन ही में लला पुनि घात लगाई।

(8) दोऊ अनंद सो आँगन माझ विराजै असाढ़ की साँझ सुहाई।
आँखिन तें गिरे आँसुन की बूँद, सुहास गयो उड़ि हंस की नाई ||

भिखारीदास

(1) काव्य की रीति सिखी सुकबीन सों देखी सुनी बहुलोक की बाते।

(2) ब्रजभाषा हेतु ब्रजबास ही न अनुमानौ,
ऐसे ऐसे कबिन की बानी हूँ, सों जानिए।

(3) आगे के कवि रीझहै, तो कविताई न तो
राधा कन्हाई सुमिरन कौ बहाना है।

(4) ब्रजभाषा भाषा रुचिर, कहै सुमति सब कोई।
मिल संस्कृत पारस्यौ, पै अति प्रवाट जु होई।।
ब्रज, मागधी मिलै अमर, नाग यवन भाखनि।
सहज पारसी हूँ मिलै, षट् विधि कहत बखानि।।

(5) जाते कछु हौं हूँ लह्यों कविताई को पन्थ।

(6) श्रीमानन के भौन में भोग्य भामिनी और।
तिनहूँ को सुकियाह में गनै सुकवि सिरमौर।।

(7) अँखियाँ हमारी दई मारी सुधि वुधि हारी।

पद्माकर

(1) आखर लगाय लेत लाखन की सामा हौं।

(2) फागु की भीर, अभीरन में गहि गोविन्द लै गई भीतर गोरी।
भाई करी मन की पद्माकर, ऊपर नाई अबीर की झोरी।।
छीनि पितम्बर कम्मर ते सु बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
नैन नचाय कही मुसकाय, लला फिर आइयो खेलन होरी।।

(3) गवरे रंग रँगी अँखियान में ए बलबीर अबीर न मैलो।

(4) ऊधम ऐसो मचों ब्रज मैं सबे रंग तरंग उमंगनि सीचैं।

देव

(1) अपनी-अपनी रीति के काव्य और कवि रीति ।

(2) भाषा प्राकृत संस्कृत देखि महाकवि पंथ। (शब्द रसायन)

(3) अभिधा उत्ताम काव्य है; मध्य लक्षणा लीन।
अधम व्यंजना रस बिरस, उलटी कहत नवीन ।।

(4) पर रस चाहै परकीया, तजै आपु गुन गोत।

(5) प्रेमहीन प्रिय वेश्या है शृंगाराभास ।

(6) दधि, धृत, मधु, पायस तजि वायसु चाम चबात।

(7) साँसन ही में समीर गयो अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि ।

(8) बेगि ही बूड़ि गई पंखियाँ अखियाँ मधु की मंखिया भई मेरी ।

(9) साँवरे लाल को रूप मैं नैनन को कजरा करि राख्यो ।।

भूषण

(1) सुकविन हूँ की कछु कृपा समुझि कविन को पन्थ।

(शिवराज भूषण)

(2) शिवा को बखानों कि बखानौ छत्रशाल को।

(3) इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सुअंभ पर
त्यों म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।

(4) दारा की दौर यह रार नहीं खुजबे की।

(5) सिवा जो न होत तो सुनत हो सबकी।

(6) ऊँचे घोर मन्दर के अन्दर रहनबारी, ऊँचे घोर मन्दर रहाती हैं। कन्दमूल भोग करें, कन्दमूल भोग करें, तीन बेर खाती सो तीन बेर खाती हैं।

(7) पच्छी पर छीने एसे परे परछीने बीर। तेरी बरछीने बर छीने हैं खलन के।

❖ बिहारीलाल

(1) नहि पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कलि हरी सो बध्यो, आगे कौन हवाल।

(2) तन्त्रीनाद कवित्त रस, सरस राग रतिरंग।
अनबूड़े बूड़े तिरे, जे बूड़े सब अंग ।।

(3) अंग-अंग नग 'जगमती, दीप शिखा सी देह।
दीया बुझाय हूँ रह्यो, बड़े उजेरो गेह ।।

(4) रस सिंगार मंजर किये, कंजन मंजन दैन।
अंजन रंजन हूँ बिना, खंजन गंजन नैन ।।

(5) अनियारे, दीरघ दृगनि किती न तरुनि समान।
वह चितवनि और कछु, जिहि बस होत सुजान॥

(6) कहत नटत रीझत खीझत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैननि ही सों बात॥

(7) मेरी भव बाधा हरौ राधा नागर सोइ।
जा तन की छाईं परै स्याम हरित दुति होई॥

(8) अपने अंग को जानिकै जोबन नृपति प्रवीन।
स्तन मन नैन नितम्ब को बड़ी इजाफा कीन॥

(9) कागद पर लिखत न बनत, कहत सन्देश लजात।
कहिहै सब तेरो हिया, मेरे हिय की बात॥

रसलीन

(1) अमिय हलाल मद भरे, सेत स्याम रतनार।
जियत, मरत, झुक-झुकि परत, जेहि चितवत एक बार ॥

(2) ब्रजबानी सीखन रची यह रसलीन रसाल।
गुन सुबरन नग अरथ लहि, हिय धरियो ज्यौं माल ॥

(3) फूले कुंजर अलि भ्रमत, सीतल चलत समीर। भान जात काको न मन जात भानुजा तीर ॥

(4) दृगन जोरि मुसकाय अरु, भौहें दोउ नचाय।
ओठनि आँठि बनाइ यह, प्राण उमेठत जाइ।।

(5) तिय सैसव - जोबन मिले, भेद न जान्यो जात।
प्रात समय निसि द्योसे के दुवौ भाव दरसात।।

(6) कत दिखाइ कामिनी दई, दामिनी को यह बाँह।
थरथराति सो तन फिरै फरफ़रात घन माँह।

(7) चख चलि स्रवन मिल्यो चहत, कच बढि छुवन छवानि।
कटि निज दरब धर्यो चहत, वक्षस्थल में आनि।।

शेख आलम

(1) कनक छूरी सी कामनी, काहे को कटि छीन। (आलम)
कटि को कंचन काटि विधि, कुचन मध्य धरि दीन ॥ (शेख)

(2) प्रेम रंग-पगे जगमगे जगे जामिनी के
जोबन की जोति जगी जोर उमगत है।

(3) जा थल किने बिहार अनेकन ता थल काँकर बैठि चुन्यो करैं।
नैननि में जो सदा रहते तिनकी अब कान कहानी सुन्यौ करैं।

(4) कैधौं मोर सोर तजि गए री अनत भाजि,
कैधौं उत दादुर न बोलत हैं, ए दई ॥

(5) रात के उनींदें अरसाते मदमाते राते,
अति कजरारे दृग तेरे यों सुहात हैं ॥

(6) दाने की न पानी की, न आवै सुध खाने की,
यौं गली महबूब की अराम खुसखाना है ॥

(7) दिल से दिलासा दीजै हाल के न ख्याल हूजै
बेखुद फकीर, वह आशिक दीवाना है ।

घनानन्द

(1) यों घन आनन्द छावत भावत, जान सजीवन ओर ते आवत ।।
लोग हैं लागि कवित्त बनावत मोहि तो मेरे कवित्त बनावत ।।

(2) अति सुधौं सनेह को मारगु हैं, जहँ नैकु सयानप बाँक नहीं ।।

(3) तुम कौन-सी पाटी पढ़े हो लला मन लेहु पे देहु छटांक नहीं । ।

(4) हीन भय जल मीन अधीन कहा कछु मों अकुलानि समानै ।।

(5) प्रेम की महोदधि अपार हेरि के विचार खरे अवरन भरे है उठि
जानको ।

बोधा (बुद्धि सेन)

(1) अति खीन मृनाल के तारहु तें नहिं ऊपर गाँव दै आवनों है।
यह प्रेम को पंथ कराल महा तरवारि की धार पै धावनी है ।।

(2) एक सुभान के आनन पै कुरबान जहाँ लगि रूप जहाँ को ।
जान मिलै तो जहान मिलै, नहिं जान मिलै तो जहान कहाँ को।

(3) कबहूँ मिलिबो, कबहूँ मिलिबो, वह धीरज ही में धरैबो करै ।
सेहत ही बनै, कहते न बनै, मन ही मन पीर पिरैबो करै ।।

(4) दाता कहा, सूर कहा, सुन्दर सुजान कहा, आपको न चाहै ताके
बाप को न चाहिए ।।

ठाकुर

(1) सीखि लीन्हों मीन मृग खंजन कमल नैन,
सीखि लीन्हों जस और प्रताप को कहाना है।
लोगन कवित्त कीबो खेल करि जानो है।

(2) भूप से लसत कवि, कवि से लसत भूप
भूप और कवि से लसत सभा की गरुआनो है।

(3) हम कविराज हैं, पै चाकर चतुर के।

(4) वा निरमोहिनी रूप की रासिजऊ उर हेतु न ठानति ह्वै है।
आवत है नित मेरे लिए इतनो तो विसेषकै जानति ह्वैं है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द

(1) सहसन बरसन सो सुन्यो जो सपने नहिंकान, सो जय आरज शब्द।

(2) फरकि उठीं सबकी भुजा, खरकि उठी तरवार।
क्यों आपुहिं ऊँचे भए आर्य मोछ के बार॥

(3) हाय! वहै भारत - भुव भारी। सब ही विधि सों भई दुखारी॥
हाय चित्तौर! लिनज तू भारी। अजहुँ खरो भारतहि मँझारि॥

(4) निज भाषा उन्नत अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान कै मिटै न हिय कै सूल॥

(5) कहाँ करुणानिधि केशव सोए?
जागत नाहिं अनेक जतन करि भारतवासी रोए।

(6) मेरे तो साधन एक ही है, जग नन्द लला वृषभानु दुलारी ।।

(7) पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना अँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं।

(8) सिसुताई अजौ न गई तन ते, तऊ जोबन जोति बहोरे लगी।

(9) आजु लौं न मिले तो कहा हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
प्यारे ज है जग की यह रीति बिदा की समैं सब कण्ठ लगावैं ।।

(10) मुँह जब लागै, तब नहिं छूटे, जाति मान धन सब कुछ लूटे।
पागल करि मोहिं करे खराब, क्यों सखि सज्जन नहीं सराब ।।

(11) हैं हैं उर्दू हाय हाय! कहाँ सिधारी हाय! हाय!

(12) सभा में दोस्तों बन्दर की आमाद है,
गधे और फूलों के अफसर की आमाद - आमाद है ।।

बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'

(1) निरधन दिन - दिन होत है, भारत भुव सब भाँति।
ताहिं बचाइ न कोउ सकत निज भुज बुधि बल काँति ॥

(2) अजरज होत तुमहुँ सम गोरे बाजत कारे।
तासों कारे 'करि' शब्दहु पर हैं वारे ॥

(3) भयो भूमि भारत में महा भयंकर भारत।
भए बीरबल सकल सुभट एकहिं सँग गारत ॥

प्रतापनारायण मिश्र

(1) चह हु साँचहु निज कल्यान, तो सब मिलि भारत सन्तान।
जपो निरन्तर एक जबान, हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।

(2) तबहि लख्यौ जहँ रह्यो एक दिन कंचन बरसत।
तहं चौथाई जन रूखी रोटिहुँ को तरसत।

(3) पढ़ि कमाय कीन्हों कहा, हरे देश कलेस।
जैसे कन्ता घर रहे तैसे रहे विदेश ।।

(4) जग जानै इंगलिश हमैं वाणी वस्त्राहि जोय।

मिटै बदन कर श्याम रंग जन्म सुफल तब होय ।।

(5) नौन तेल लकरी घासहु पर टिक्स लगे जहं।

चना चिरौंजी मोल मिलें जहं दीन प्रजा कहं ।।

(6) अभी देखिए क्या दशा देश की हो।

बदलता है रंग आसमां कैसे कैसे।

(7) कौन करे जो नहिं कसकत सुनि विपत्ति बाल

बिधवन की।

(8) विधवा विलपैं नित धेनु कटें कोड लागत हाय गोहार नहीं ।।

ठाकुर जगमोहन सिंह

(1) अब यों उर आवत है सजनी, मिलि जाउं गरे लगि कै छतियाँ मन की करि भाँति अनेकन औ मिलि की जियरी रस की बतियाँ हम हारि अरी करि उपाय, लिखी बहु नेह भरी पत्तियाँ।

जगमोहन मोहनी मूरति के बिना कैसे कटे दुःख की रतियाँ ।।

(2) पहार आपार कैलास से कोटिन ऊँची शिखा लगि अम्बर चूम।

निहारत दीठि भ्रमै पगिया गिरि जात उतंगता ऊपर झूम ।।

(3) कुलकानि तजी गुरु लोगन में बसिकै सब बैन कुबैन सहा ।

सब छोड़ि तुम्हें हम पायो अहो तुम छोड़ि हमै कहो पाया कहा।

द्विवेदीयुगीन कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ

द्विवेदीयुगीन कवियों की महत्त्वपूर्ण काव्य पंक्तियाँ निम्नलिखित हैं-

श्रीधर पाठक

(1) निज भाषा बोलहु लिखहु पढ़हु गुनहु सब लोग।
करहु सकल विषयन विषै निज भाषा उपजोग ।।

(2) पंदनीय वह देश जहाँ के देशी निज अभिमानी हों ।
वन्धवता में बँधे परस्पर परता के आज्ञनी हो ।।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

(1) सुरम्यरूपे, रसराशि रंजिते,
विचित्र वर्णाभरणे। कहाँ गई ?
अलौकिकानन्द विधायनी महा
कवीन्द्रकान्ते, कविते! अहो कहाँ?
मांगल्य मूलमय वारिद - वारि वृष्टि ।।

(2) तुम्हीं अन्नदाता भारत के सचमुच बैलराज! महाराज!
बिना तुम्हारे हो जातें हम दाना दाना को मोहताज।।

(3) श्रीयुक्त नागरि विहारि दशा तिहारी।
होवै विषाद मन मांहि अतीव भारी ।।

(4) भैंसि भवानी के तब सेवा लागे करन पढ़व गा छूटि।
बटुवन दूध दुहा इन हाथन धार न कबहुँ दुहत माँ टुटि ।।

(मैथिलीशरण गुप्त)

(भारत भारती से)

(1) भू-लोक का गौरव प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल जहाँ।

सम्पूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है? उसका कि जो
ऋषिभूमि है, वह कौन ? भारतवर्ष है ॥

(2) हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएँ सभी ।।

(3) केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए ।।

(4) क्षत्रिय! सुनो अब तो कुयश की कालिमा को भेट दो ।
निज देश को जीवन सहित तन मन और धन भेंट दो ।
वैश्यो ! सुनो व्यापार सारा मिट चुका है देश का ।
सब धन विदेशी हर रहें हैं, पार है क्या क्लेश का ।। (साकेत से)

(5) राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या ?
विश्व में रमें हुए नहीं सभी कहीं हो क्या ?
तब मैं निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करे,
तुम न रमो तो मन तुममें रमा करे ।।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

(1) दिवस का अवसान समीप था। गगन था कुछ लोहित हो
चला।।
तरु शिखा पर थी अब राजती। कमलिनी कुल - वल्लभ को
प्रभा।।

(2) प्रिय पति, वह मेरा प्राण प्यारा कहा है? दु:ख जलनिधि डूबी
का सहारा कहाँ है?
लख मुख जिसका मैं आज लौ जी सकी हूँ। वह हृदय हमारा
नैन तारा कहाँ है।

(3) रूपोद्यान प्रफुल्लप्राय कलिका राकेंदुबिंबानना। तन्वंगी
कलहासिनी सुरसिका क्रीडाकलापुत्तली।

(4) शोभा वारिधि की अमूल्य मणि सी लावण्यलीला मयी।
श्री राधामृदुभाषिणी मृगदृगी माधुर्यसन्मूर्ति थी।।

(5) धीरे - धीरे दिन गत हुआ पद्मिनीनाथ डूबे।
आई दोषा फिर गत हुई, दुसरा वार आया।।

नाथू राम शर्मा 'शंकर'

(1) देशभक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।

(2) छड़ी धार छैल छबीले बनो, रंगीले, रसीले, फबीले बनो। न
चूको भले भोग भोगी बनो, किसी बेड़नी के वियोगी बनो।

(3) भड़क भुला दो भूतकाल की सजिये वर्तमान के साज। फैसन
फेर इण्डिया भर के गोरे गॉड बनो ब्रजराज ॥

(4) शंकर नदी नंद नदी सन के नीरन की,
भाप बन अंबर ते ऊँची चढ़ जाएगी।

रामनरेश त्रिपाठी

(1) गन्ध - विहीन फूल हैं जैसे चन्द्र चन्द्रिका - हीन।
यों ही फीका है मनुष्य का जीवन प्रेम-विहीन ।।

(2) प्रेम स्वर्ग है, स्वर्ग प्रेम है, प्रेम अशंक अशोक।
ईश्वर का प्रतिबिम्ब प्रेम है, प्रेम हृदय आलोक ।।

(3) सच्चा प्रेम वही है जिसकी तृप्ति आत्म- बलि पर हो निर्भर।
त्याग बिना निष्प्राण प्रेम है करो प्रेम पर प्राण निछावर।

(4) देश-प्रेम वह पुण्य क्षेत्र है, अमल असीम त्याग से विलसित।
आत्मा के विकास से जिसमें, मनुष्यता होती है विकसित ।।

(5) पराधीन रह कर अपना सुख शोक न कह सकता है।
वह अपमान जगत में केवल पशु ही सह सकता है।

सत्यनारायण 'कविरत्न'

(1) अलबेली कहु बेलि द्रुमन सों लिपटि सुहाई।
धोए - धोए पातन की अनुपम कमनाई ।।

(2) लखि वह सुषमा जाल लाल निज बिन नंदरानी।
हरि सुधि उमड़ी घुमड़ी तन उर अति अकुलानी ।।

(3) कीनै भेजौं दूत, पूत सों बिथा सुनावे।
बातन मे बहराइ जाइ ताको यहँ लावै ॥

(4) नित नव परत अकाल, काल को चलत चक्र चहु।
जीवन को आनन्द न देख्यों जात यहाँ कहु ॥